

कलावा पुं. (तद्.) (तत्.-कलापक) 1. कच्चे सूत का लाल-पीला रँगा हुआ वह धागा या डोरा जो मांगलिक अवसरों पर कलाई या कलश आदि पर बाँधा जाता है 2. कलाबत्तू 3. सूत की लच्छी, गोला।

कलावाद पुं. (तत्.) (काव्य) 1. कलाकार के लिए सौंदर्य-सृष्टि और सौंदर्यानुभूति को ही महत्वपूर्ण तथा "कला के लिए कला" भर मानने वाला विशिष्ट मत जिसके अनुसार नैतिकता या उपयोगिता का कोई महत्व नहीं होता 2. "कला का उद्देश्य कला" मानने वाला मत।

कलावान वि. (तत्.) 1. कलाओं का मर्मज्ञ। 2. कलाकार, कलावंत पुं. कलाकार व्यक्ति, कलाकुशल, कलाकार।

कलाविद् पुं. (तत्.) 1. किसी कला का ज्ञाता या मर्मज्ञ व्यक्ति 2. कलाकार, कलावंत।

कला-समीक्षा स्त्री. (तत्.) 1. कला या कलात्मक वस्तु की समीक्षा 2. सौंदर्य, गुण-दोष तथा कलात्मकता का मूल्यांकन 3. कला-कृति की सुंदरता संबंधी गुण-दोषों की विवेचना, जाँच या परख।

कलिंग पुं. (तत्.) 1. एक प्राचीन देश (जहाँ सम्राट अशोक को युद्ध के उपरांत विरक्ति हुई थी, उड़ीसा प्रांत का एक भाग 2. तरबूज 3. कुलंग पक्षी। 4. एक राग (विशेष)।

कलिंगड़ा पुं. (तद्.) 1. तरबूज 2. कलिंग क्षेत्र का रहने वाला।

कलिंद पुं. (तत्.) 1. तरबूज 2. बहेड़े का वृक्ष 3. सूर्य 4. यमुना का उद्गम 5. एक पर्वत।

कलि पुं. (तत्.) 1. कलियुग (सतयुग, त्रेता, द्वापर के बाद का चौथा युग) 2. स्त्री. कली (फूल) या 'कलिका' 3. (तत्.) झगड़ा, युद्ध 4. दुष्ट व्यक्ति 5. कलह, क्लेश 6. पाप 7. पाँसे का एक पक्ष (जिस पर एक बिंदी बनी हो)। 2. क्रि.वि. सुख पूर्वक, चैन से।

कलि-अंकुस वि. (तद्.) 1. कलियुग के प्रभाव पर नियंत्रण रखने वाला 2. पापों का बाधक।

कलिअल पुं. (देश.) 1. कलकल ध्वनि 2. पक्षियों के चहचहाने की ध्वनि 3. कलरव 4. मधुर रव या स्वर।

कलिकर्म पुं. (तत्.) 1. बुरा या निकृष्ट कर्म 2. युद्ध, झगड़ा, कलह, क्लेश।

कलिका स्त्री. (तत्.) कली (फूल की) जैसे- कुसुम-कलिका।

कलिकारक वि. (तत्.) 1. कलह करने वाला, झगड़ालू 2. विवादी पुं. नारद (ऋषि)।

कलिकाल पुं. (तत्.) कलियुग।

कलित वि. (तत्.) 1. युक्त 2. विभूषित 3. रचित जैसे- कनक कलित 4. सुंदर 5. गणना किया हुआ, आँका हुआ उदा. जासु रूप गुन नहीं कलित -गीतावली तुलसी 6. मधुर तथा अस्पष्ट ध्वनि।

कलितरु पुं. (तत्.) 1. बबूल का वृक्ष (जिसमें काँटे होते हैं) 2. पापरूपी वृक्ष।

कलिप्रिय वि. (तत्.) 1. कलहप्रिय, जिसे झगड़ा तथा कलह करने में झिझक न हो 2. दुष्ट स्वभाव वाला पुं. (तत्.) ऋषि नारद।

कलिमल पुं. (तत्.) 1. कलियुग का पाप 2. दोष 3. कलुष 4. कालिमा 5. दाग, कालापन।

कलिया पुं. (अर.) घी और मसालों में भूना हुआ रसयुक्त मांस 2. पशुओं का कच्चा मांस 3. पकाया हुआ मांस।

कलियाना अ.क्रि. (तद्.) 1. वृक्षों या बेलों पर फूलों की नई कली आना 2. पौधे पर नई कलियाँ फूटना 3. पक्षियों के नए-नए पर आना।

कलियारी स्त्री. (तद्.) 1. कलहप्रिय नारी 2. कलह करने वाली।

कलियुग पुं. (तत्.) ज्यो. सतयुग, त्रेता तथा द्वापर के उपरांत 3102 वर्ष ई.पू. प्रारंभ होने वाला (आधुनिक मान्यता के अनुसार) वर्तमान- 'कलियुग' नामक चौथा युग जिसकी कुल अवधि 4,32000 वर्ष होती है 2. ऐसा काल या समय